डॉ० अनुजा कुमारी
(इतिहास विभाग)
एस० एन० एस० आर० के० एस कॉलेज
सहरसा

Scanned By Scanner Go

3) Describe in brive In betbeen Stage and Charche do ren of elizabeth ~~elizo~~ soiver the Queen

महारानी एलिजाबेथ शासन को राजा और चर्च के संबंध को संक्षेप करें।

Ans:- इंगलैंड के ~~सर्व~~ संमवैधानिक इतिहास में महारानी ऐलिजाबेथ का शासन काल बड़ा ही महत्व रखता है। वैसे वह चतुर महिला थी। और सबसे बड़ी बात तो यह है। कि उसका दिमाग वेवक से भरा हुआ है। था। जिस महारानी ऐलिजाबेथ का राजा अभिषेक हुआ था उस समय इंगलैंड में भंयक धार्मिक समस्याये थी। कैथोलिक प्रोटेस्टेन्ट के बीच गहरी खाई बनती जाती थी। अस्थति इतनी नाजुक थी की दोनो धर्म के मामले में एक दूसरे के खुन पीने के लिए भी तत्पर था। लेकिन महारानी ऐलिजाबेथ ~~थी~~ जो समय - समय से घबराने वाली महिला नही थी उन्होने अपनी बुद्धि और विवेक के बल पर सारी समस्याओ को सामना की

महारानी ऐलिजाबेथ का शासन 1558 ईसे 1603 ई० का है। वैसे तो वह चतुर महिला थी और उसका दिमाग हर पल हर पल सोचने में लगा रहता था। वैसे तो यह बात अलग है कि महारानी ऐलिजाबेथ को धर्म के क्षेत्र मे बहुत ज्यादा लगाव नही था। लेकिन उस समय इंगलैंड की स्थिति बनी हुई थी उसमे सुधार लाना इसका परम कर्तव्य था।

Scanned By Scanner Go

लेकिन इस क्रम में उन्होंने दमन की निति का प्रयोग कभी भी प्रयोग नही किया क्यों कि उस समय इंग्लैंड की जानता काफी उग्र थी इसी लिए उसने प्रेम एवं सहान मुक्ति के बल पर ही इन चीजों की निवटाना उचित समझा लेकिन सबसे दुखद पहलु यह है कि महारानी एलिजाबेथ का पोप के साथ कभी अच्छा संबंध नही रहा इसका एक मात्र कारण यह था कि पोप से उसे व्यक्तिगत चीढ़ थी। क्यों कि पोप ने उनकी माता को ऐनवोलिंग से विवाह करने की आज्ञा नही दी थी। दूसरी बात यह है कि वह इस चीज को भली भाती जानती थी इंगलैंड की जानता भी पोप की हुकूमत में रहना नही चाहती थी। ऐसी स्थिति में उसने सर्वोच्चियता नियम पास करवा कर और चर्च पर अपना पुर्ण अधिकार स्थापित कर लिया लेकिन जहाँ तक चर्च के प्रधान का सवाल है। तो उसमे उसके स्थान पर चर्च शासक की पद्वी धारण की न की प्रधान की उन्होंने ऐसा इसलिए किया कि क्यों कि ऐसा करने से कैथलिकों का भावना का कद्र हो रहा था। इतना ही नही इसके बाद उन्होंने छठे एडवर्ड की समय दूसरी प्रार्थना पुस्तक प्रसार प्रचार पर अधिक बल दिया ऐसा कर के कैथोलिकों अपने पक्ष में कर लिया अब इंगलैंड मे नियम बना दिया गया कि अब कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रार्थना

Scanned By Scanner Go